सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का एकादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक नव संवत्सर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। जयप्रकाश शर्मा द्वारा लिखित **सन्ध्या महत्त्व** लेख में त्रिकाल सन्ध्या के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए त्रिकाल सन्ध्या की विधि, समय तथा प्रभाव को स्पष्ट किया है। प्रियंका द्वारा लिखित **पाण्डुलिपि विज्ञान** लेख में भारतीय ज्ञान राशि की धरोहर पाण्डुलिपि का अर्थ, पाण्डुलिपियों का स्वरूप, लेखन का आधार, लेखन के उपकरण पाण्डुलिपियों के प्रकार, प्राप्ति स्थल, एवं पाण्डुलिपि संरक्षण की प्राचीन एवं वैज्ञानिक विधि को स्पष्ट किया है। वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी द्वारा लिखित **तुलसी से आरोग्य वृद्धि** लेख में तुलसी के पौधे की महत्ता स्पष्ट करते हुए तुलसी के प्रकार, गुणवत्ता एवं तुलसी का स्वास्थ्य रक्षा में किये जाने वाले उपयोग का वर्णन है।

अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा